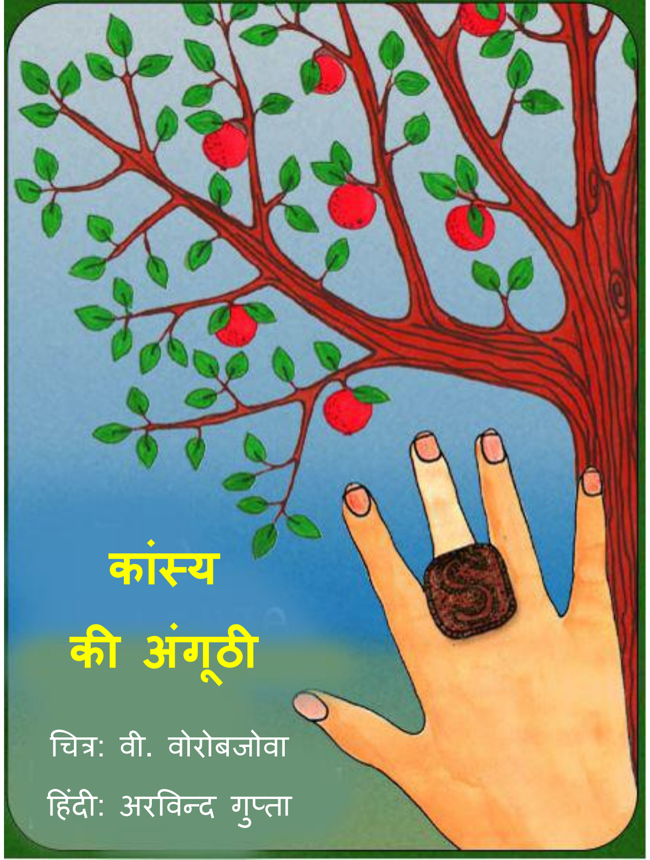


कांस्य की अंगूठी

चित्र: वी. वोरोबजोवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



एक समय की बात है, किसी देश में एक राजा रहता था जिसका महल एक विशाल बगीचे से घिरा हुआ था. हालाँकि, माली बहुत थे और मिट्टी भी अच्छी थी, फिर भी राजा के बगीचे में न फूल थे, न फल, यहाँ तक कि घास या छायादार पेड़ भी नहीं थे.

राजा इस बारे में काफी निराशा था. तभी एक बुद्धिमान बूढ़े व्यक्ति ने राजा से कहा:

"आपके माली अपना काम नहीं समझते हैं; परन्तु उन लोगों से आप क्या आशा कर सकते हैं जिनके पिता मोची और बढ़ई थे? फिर उन्हें बागबानी का काम कैसे आएगा?"

"आप बिलकुल सही कह रहे हैं," राजा चिल्लाया.

"इसलिए," बूढ़े आदमी ने आगे कहा, "आपको एक ऐसा माली चाहिए जिसके पिता और दादा उससे पहले माली रहे हों, और फिर बहुत जल्द ही आपका बगीचा हरी घास और फूलों से भर जाएगा, और तब आप ताज़े स्वादिष्ट फलों का आनंद लेंगे."

अत: राजा ने अपने राज्य के प्रत्येक नगर, गांव, और गांव में ऐसे माली की तलाश करने के लिए दूत भेजे, जिनके पूर्वज भी माली थे, और चालीस दिन के बाद दूतों को एक ऐसा ही माली मिला.

उन्होंने उससे कहा, "हमारे साथ चलो और राजा के माली बनो."

"मैं राजा के पास कैसे जा सकता हूँ," माली ने कहा, "मैं एक गरीब आदमी हूं?"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है." दूतों ने कहा, "यहां आपके और आपके परिवार के लिए नए कपड़े हैं."

"लेकिन मुझ पर कई लोगों का पैसा बकाया है."

उन्होंने कहा, "हम आपका कर्ज चुका देंगे."



फिर माली राज़ी हुआ, और वो दूतों के साथ अपनी पत्नी और पुत्र को भी लेकर चला गया. राजा एक असली माली पाकर प्रसन्न हुआ. उसने उसे अपने बगीचे की देखभाल का जिम्मा सौंपा. उस व्यक्ति को शाही उद्यान में फूल और फल उगाने में कोई कठिनाई नहीं हुई, और एक वर्ष में ही बिल्कुल बदल गया, और राजा ने अपने नए माली पर उपहारों की वर्षा की.

जैसा कि आप पहले ही सुन चुके हैं, माली का एक बेटा था, जो एक बहुत ही सुंदर युवक था, जिसका व्यवहार सबसे मिलनसार था, और वह हर दिन राजा के लिए बगीचे के सबसे अच्छे फल और उनकी बेटी के लिए सबसे सुंदर फूल लेकर जाता था. राजकुमारी आश्चर्यजनक रूप से सुंदर थी और वो केवल सोलह वर्ष की थी, और राजा को लगने लगा था कि अब कि उसकी शादी करने का समय आ गया था.

“मेरे प्यारी बेटी,” राजा ने कहा, “तुम्हारी उम्र शादी करने की हो गई है, इसलिए मैं तुम्हारी शादी अपने प्रधान मंत्री के बेटे से करने की सोच रहा हूँ."

“पिताजी,” राजकुमारी ने उत्तर दिया, “मैं मंत्री के बेटे से कभी शादी नहीं करूंगी.”

"क्यों नहीं?" राजा से पूछा.

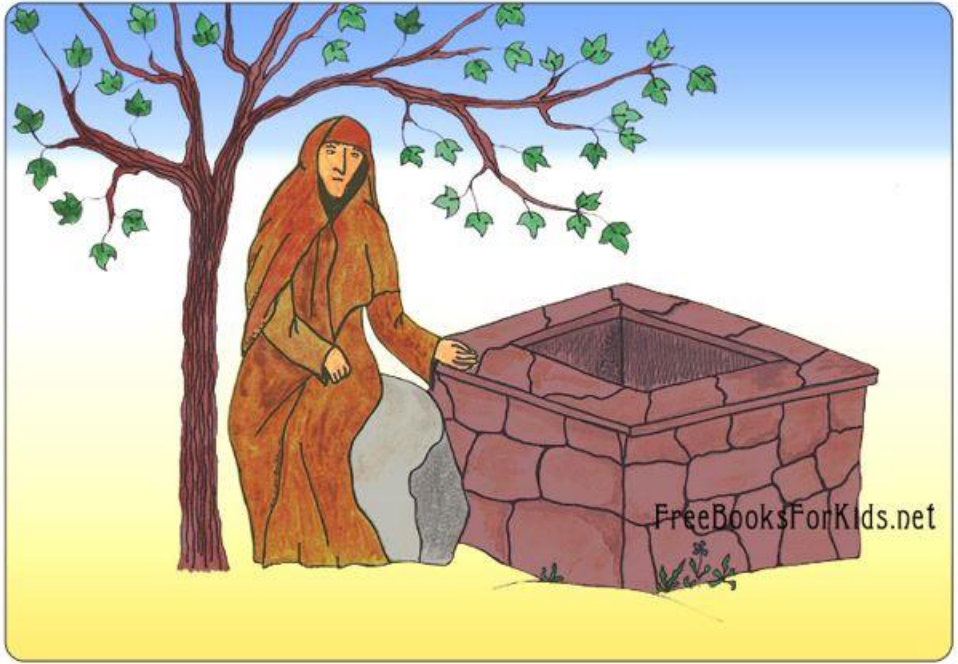
“क्योंकि मैं माली के बेटे से प्यार करती हूँ,” राजकुमारी ने उत्तर दिया.



यह सुनकर राजा पहले तो बहुत क्रोधित हुआ, और फिर रोने और आहें भरने लगा, और उसने घोषणा की कि ऐसा पति उसकी बेटी के योग्य नहीं होगा. लेकिन युवा राजकुमारी, माली के बेटे से शादी करने के अपने संकल्प से पीछे नहीं हटने वाली थी.

तब राजा ने अपने मंत्रियों की सलाह ली. "आपको यह करना चाहिए," मंत्रियों ने कहा, "माली के बेटे से छुटकारा पाने के लिए आप दोनों दूल्हों को बहुत दूर देश भेजें, और उनमें से जो पहले लौटकर आए वही आपकी बेटी से शादी करे."

राजा ने इस सलाह का पालन किया. फिर मंत्री के बेटे को एक शानदार घोड़ा और सोने के सिक्कों से भरा एक बटुआ दिया गया, जबकि माली के बेटे को एक बूढ़ा लंगड़ा घोड़ा और तांबे के पैसों से भरा एक बटुआ दिया गया. हर किसी ने सोचा कि माली का लड़का अपनी यात्रा से कभी वापस नहीं लौटेगा.



उनके जाने से एक दिन पहले राजकुमारी अपने प्रेमी से मिली और उसने उससे कहा:

“बहादुर बनो, और हमेशा याद रखना कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ. गहनों से भरा यह पर्स ले लो और मेरे प्रेम के लिए इसका सबसे अच्छा उपयोग करो, और जल्दी से वापस आओ और मेरा हाथ मांगो.”

दोनों दूल्हे एक साथ शहर से बाहर निकले, लेकिन मंत्री का बेटा अपने अच्छे घोड़े पर सरपट दौड़ता हुआ चला गया, और जल्द ही सबसे दूर की पहाड़ियों के पीछे दृष्टि से ओझल हो गया. वह कुछ दिनों तक यात्रा करता रहा, और अंततः एक फव्वारे के पास पहुंचा, जहाँ एक बूढ़ी औरत एक पत्थर पर बैठी थी.



“तुम्हारा दिन शुभ हो, युवा यात्री,” बूढ़ी ने कहा.

लेकिन मंत्री के बेटे ने उसे कोई जवाब नहीं दिया.

“मुझ पर दया करो, यात्री,” उसने फिर कहा. "जैसा कि तुम देख रहे हैं, मैं भूख से मर रही हूं, और मुझे यहां तीन दिन हो गए हैं और किसी ने मुझे कुछ खाने को नहीं दिया है."

“मुझे अकेला रहने दो, बूढ़ी चुड़ैल,” युवक चिल्लाया; ''मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता,'' और इतना कहकर वह अपने रास्ते चला गया.

उसी शाम माली का बेटा अपने लंगड़े भूरे घोड़े पर सवार होकर फव्वारे पर पहुंचा.

“तुम्हारा दिन शुभ हो, युवा यात्री,” भिखारी महिला ने कहा.

“शुभ दिन, अच्छी महिला,” उसने उत्तर दिया.

"युवा यात्री, मुझ पर दया करो."

"मेरा पर्स ले लो, अच्छी औरत," उसने कहा, "और मेरे पीछे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे पैर बहुत कमज़ोर हैं."

बुढ़िया ने दुबारा पूछने का इंतजार नहीं किया, बल्कि वो तुरंत उसके पीछे बैठ गई और इस तरह वे एक शक्तिशाली राज्य के मुख्य शहर में पहुंचे. मंत्री का बेटा एक भव्य सराय में ठहरा था, तभी माली का बेटा और बूढ़ी औरत भीख माँगने के लिए उस सराय में उतरे.

अगले दिन माली के बेटे ने सड़क पर एक बड़ा शोर सुना. राजा के दूत सभी प्रकार के वाद्ययंत्र बजाते हुए और चिल्लाते हुए गुजरे:

“राजा, हमारा स्वामी, बूढ़ा और बीमार है. जो कोई उसे ठीक करेगा और उसे उसकी जवानी की ताकत लौटा देगा उसे राजा एक बड़ा इनाम देगा.”

तब बूढ़ी भिखारिन ने अपने दाता माली के बेटे से कहा:

“राजा ने जो इनाम देने का वादा किया है उसे पाने के लिए देखो तुम्हें यह करना होगा. नगर के बाहर दक्षिणी फाटक के पास जाओ, और वहां तुम्हें भिन्न-भिन्न रंग के तीन छोटे कुत्ते मिलेंगे; पहला सफ़ेद, दूसरा काला, तीसरा लाल होगा. तुम्हें उन्हें मार डालना और फिर उन्हें अलग-अलग जला देना और उनकी राख इकट्ठा करना. प्रत्येक कुत्ते की राख को उसके अपने रंग के थैले में रखना, फिर महल के दरवाजे के सामने जाना और चिल्लाना, 'अल्बानिया के जेनिना से एक प्रसिद्ध चिकित्सक आया. केवल वही राजा को ठीक कर सकता है और उसे उसकी युवावस्था की ताकत वापस दे सकता है.' अंत में, खुद को बीमार राजा के सामने पेश करना. फिर तुम उतनी लकड़ी मांगना जितनी तीन खच्चर ढो सकें, और एक बड़ा कड़ाही. फिर तुम अपने आप को सुल्तान के साथ एक कमरे में बंद कर लेना और जब कड़ाही उबल जाए फिर तुम राजा को उसमें फेंक देना, और उसे तब तक छोड़ देना चाहिए जब तक उसका मांस उसकी हड्डियों से पूरी तरह अलग न हो जाए. फिर हड्डियों को उनके उचित स्थान पर व्यवस्थित करके और तीन थैलियों की राख उनके ऊपर फेंक देना. राजा फिर से जीवित हो जायेगा और वैसा हो जायेगा जैसा वह बीस वर्ष का हो. अपने इनाम के लिए तुम कांस्य की अंगूठी की मांग करना जो तुम्हें वह सब कुछ देने की शक्ति देगी जो तुम चाहते हो. जाओ, मेरे बेटे, और मेरी कोई भी शिक्षा मत भूलना.”

युवक ने बूढ़ी भिखारी महिला के निर्देशों का पालन किया. शहर से बाहर जाने पर उसे सफेद, लाल और काले कुत्ते मिले और उसने उन्हें मारकर जला दिया और राख को तीन थैलियों में इकट्ठा किया. फिर वह महल की ओर भागा और चिल्लाया:

“एक प्रसिद्ध चिकित्सक अभी-अभी अल्बानिया के जेनिना से आये हैं. वह अकेले ही राजा को ठीक कर सकते हैं और उसे उनकी जवानी की ताकत वापस दे सकते हैं."

राजा के चिकित्सक पहले तो अज्ञात यात्री पर हँसे, लेकिन सुल्तान ने आदेश दिया कि अजनबी को अंदर लाया जाए. वे कड़ाही और लकड़ियां लेकर आये, और फिर जल्द ही राजा उबलने लगा. दोपहर के समय माली के बेटे ने हड्डियों को उनके स्थान पर व्यवस्थित रख दिया, और उसने बूढ़े राजा के पुनर्जीवित होने से पहले ही उन पर राख बिखेर दी थी, ताकि वह खुद को एक बार फिर से युवा और पा सके.

"मैं तुम्हें क्या इनाम दे सकता हूँ, मेरे उपकारक?" राजा ने कहा. "क्या तुम मेरा आधा खजाना लोगे?"

“नहीं,” माली के बेटे ने कहा.

"मेरी बेटी का हाथ?"

"नहीं."

“मेरा आधा राज्य ले लो.”

"नहीं. मुझे केवल कांस्य की अंगूठी दीजिए जो मैं जो भी चाहूं मुझे तुरंत दे सके.'

“हाय!” राजा ने कहा, “उस अद्भुत अँगूठी से मैंने बहुत धन इकट्ठा किया है; फिर भी मैं उसे तुम्हें दूंगा.” और फिर राजा ने उसे वो अंगूठी दे दी.

माली का बेटा बूढ़ी भिखारी औरत को अलविदा कहने के लिए वापस गया. फिर उसने कांस्य की अंगूठी से कहा:

“एक शानदार जहाज तैयार करो जिसमें मैं अपनी यात्रा जारी रख सकूं. पतवार सोने का, मस्तूल चाँदी का, पाल जरी के काम की हों; और चालक दल में राजाओं की तरह कपड़े पहने हुए, कुलीन दिखने वाले बारह युवक शामिल हों. सेंट निकोलस शीर्ष पर हों. जहाँ तक माल की बात है, वह हीरे, माणिक, पन्ना आदि ही हों.”

और तुरंत समुद्र में एक जहाज दिखाई दिया, जो माली के बेटे द्वारा बताए गए विवरण से मिलता-जुलता था, और उस पर कदम रखते हुए, उसने अपनी यात्रा जारी रखी.

कुछ समय बाद वह एक महान शहर में पहुंचे और खुद को एक अद्भुत महल में स्थापित किया. कई दिनों के बाद वह अपने प्रतिद्वंद्वी, मंत्री के बेटे से मिला, जिसने अपना सारा पैसा खर्च कर दिया था और अब वो धूल और कूड़ा-कचरा ढोने वाला अप्रिय रोजगार करने को मज़बूर था. माली के बेटे ने उससे कहा:

"आपका नाम क्या है, आपका परिवार क्या है और आप किस देश से आये हैं?"

"मैं एक महान राष्ट्र के प्रधान मंत्री का बेटा हूं, और फिर भी देखिये कि मैं कितना अपमानजनक पेशे करने को मज़बूर हूँ."

"मेरी बात सुनो; हालाँकि मैं आपके बारे में और कुछ नहीं जानता हूँ, फिर भी मैं आपकी मदद करने को तैयार हूँ. मैं एक शर्त पर तुम्हारे देश वापस ले जाने के लिए तुम्हें एक जहाज दूँगा.”

"चाहे जो भी हो, मैं इसे स्वेच्छा से स्वीकार करूंगा."

"चलो मेरे महल तक चलो."

मंत्री के बेटे ने उस अमीर अजनबी का पीछा किया, जिसे उसने नहीं पहचाना था. जब वे महल में पहुँचे तो माली के बेटे ने अपने दासों को इशारा किया, जिन्होंने नवागंतुक को पूरी तरह से निर्वस्त्र कर दिया.

“इस अंगूठी को गर्म करो,” मालिक ने आदेश दिया, “और उससे उस आदमी की पीठ पर निशान बना दो.”

दासों ने उसकी बात मानी.



"अब, जवान आदमी," अमीर अजनबी ने कहा, "मैं तुम्हें एक जहाज देने जा रहा हूं जो तुम्हें तुम्हारे देश वापस ले जाएगा."

और बाहर जाकर उसने पीतल की अंगूठी ली और कहा:

“कांस्य की अंगूठी, अपने स्वामी की आज्ञा मानो. मेरे लिए एक जहाज तैयार करो जिसकी आधी सड़ी हुई लकड़ियाँ काले रंग से रंगी जाएँ, पाल चिथड़ों के हों और नाविक दुर्बल और बीमार हों. एक का एक पैर टूटा हुआ हो, दूसरे का हाथ, तीसरा कुबड़ा होगा, चौथा लंगड़ा या अंधा हो, और उनमें से अधिकांश कुरूप हों और घावों से ढके हों. जाओ, और मेरे आदेशों का पालन करो.”

मंत्री का बेटा इस पुराने जहाज पर चढ़ गया और अनुकूल हवाओं के कारण अंततः अपने देश पहुँच गया. जिस दयनीय स्थिति में वह वापस लौटा, उसके बावजूद लोगों ने खुशी से उसका स्वागत किया.

“मैं वापस आने वाला पहला व्यक्ति हूं,” उसने राजा से कहा; अब अपना वचन पूरा करो और राजकुमारी का विवाह मुझसे कर दो.

इसलिए उन्होंने तुरंत विवाह उत्सव की तैयारी शुरू कर दी. जहाँ तक बेचारी राजकुमारी की बात है, वह इस बात से काफी दुखी और गुस्सा हुई.

अगली सुबह, भोर के समय, सोने पाल के साथ एक अद्भुत जहाज ने शहर के सामने लंगर डाला. राजा उसी समय महल की खिड़की पर था.

“यह कैसा अजीब जहाज है,” वह चिल्लाया, “इसकी पतवार सुनहरी है, मस्तूल चांदी के हैं, और पाल रेशमी हैं, और इसे चलाने वाले राजकुमारों जैसे जवान कौन हैं? और देखो सेंट निकोलस शीर्ष पर हैं? तुरंत जाओ और जहाज के कप्तान को महल में आने का निमंत्रण दो.”

उसके नौकरों ने उसकी बात मानी और जल्द ही एक आकर्षक सुंदर युवा राजकुमार, रेशम के कपड़े पहने, मोतियों और हीरों से सजा हुआ, अंदर आया.

“नौजवान,” राजा ने कहा, “तुम्हारा स्वागत है, चाहे तुम कोई भी हो. जब तक चाहो तुम मेरी राजधानी में रहो और मेरा आतिथ्य स्वीकार करो.”

"बहुत धन्यवाद, श्रीमान," कप्तान ने उत्तर दिया, "मैं आपका प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ."

“मेरी बेटी की शादी होने वाली है,” राजा ने कहा; "क्या आप उसका कन्यादान करेंगे?"

"वो मेरा सौभाग्य होगा, श्रीमान."

कुछ ही देर बाद राजकुमारी और उसकी मंगेतर आये.

“क्यों, ये कैसा?” युवा कप्तान चिल्लाया; "क्या आप इस आकर्षक राजकुमारी का विवाह ऐसे व्यक्ति से करेंगे?"

"लेकिन वह मेरे प्रधान मंत्री का बेटा है!"

"उससे क्या फ़र्क पड़ता है? मैं आपकी बेटी का कन्यादान नहीं कर सकता. जिस आदमी से उसकी मंगनी हुई है वह मेरे नौकरों में से एक है.”

“आपका नौकर?”

"बेशक, मैं उनसे एक दूर के शहर में मिला जहां घरों से धूल और कूड़ा-कचरा उठाया करता था. मुझे उस पर दया आयी और मैंने उसे अपने नौकरों में से एक बना लिया.”

"यह असंभव है!" राजा चिल्लाया.

“क्या आप चाहते हैं कि मैं जो कहता हूँ उसे सिद्ध कर दूँ? यह युवक एक जहाज में लौटा, जिसे मैंने उसके लिए तैयार किया था, एक काला जहाज जिसका पतवार टूटा हुआ था, और नाविक दुर्बल और अपंग थे.

“यह बिल्कुल सच है,” राजा ने कहा.

“यह झूठ है,” मंत्री का बेटा चिल्लाया. "मैं इस आदमी को नहीं जानता!"

"सर," युवा कप्तान ने कहा, "अपनी बेटी के मंगेतर को निर्वस्त्र करने का आदेश दें, और देखें कि मेरी अंगूठी का निशान उसकी पीठ पर अंकित होगा."

राजा यह आदेश देने ही वाला था, तभी मंत्री के बेटे ने खुद को इस अपमान से बचाने के लिए स्वीकार किया कि कहानी सच थी.

“और अब, श्रीमान,” युवा कप्तान ने कहा, “क्या आप मुझे नहीं पहचानते?”

“मैं तुम्हें पहचानती हूं,” राजकुमारी ने कहा; "तुम माली के बेटे हो जिससे मैंने हमेशा प्यार किया है, और मैं तुमसे ही शादी करना चाहती हूँ."

“युवक, तुम मेरे दामाद बनोगे,” राजा ने चिल्लाकर कहा. "शादी का उत्सव शुरू हो चुका है, इसलिए तुम इसी दिन मेरी बेटी से शादी करोगे."

और इसलिए उसी दिन माली के बेटे ने खूबसूरत राजकुमारी से शादी कर ली.

कई महीने बीत गए. युवा दंपत्ति बहुत खुश थे, और राजा ऐसा दामाद पाकर खुद से और भी अधिक खुश था.

लेकिन, तभी सुनहरे जहाज के कप्तान ने लंबी यात्रा करना जरूरी समझा और अपनी पत्नी को प्यार से गले लगाने के बाद वह जहाज पर चढ़ गया.

अब राजधानी के बाहरी इलाके में एक बूढ़ा जादूगर रहता था, जिसने अपना जीवन ब्लैक मैजिक, कीमिया, ज्योतिष, जादू और मंत्र-तंत्र का अध्ययन करने में बिताया था. इस आदमी को पता चला कि माली का बेटा केवल जिन्न की मदद से राजकुमारी से शादी करने में सफल हुआ था और उसने कांस्य की अंगूठी का सहारा लिया था.

"वह अंगूठी मेरे पास होगी," उसने खुद से कहा. इसलिए वह समुद्र के किनारे गया और कुछ छोटी लाल मछलियाँ पकड़ लाया. सचमुच, वे बहुत आश्चर्यजनक रूप से सुंदर थीं. फिर वह वापस आया, और राजकुमारी की खिड़की के सामने से गुजरते हुए चिल्लाने लगा:

"कुछ सुंदर छोटी लाल मछलियाँ कौन चाहता है?"

राजकुमारी ने उसकी बात सुनी, और अपने एक दास को बाहर भेजा, जिसने बूढ़े फेरीवाले से कहा:

"आप अपनी मछली के लिए क्या लोगे?"

"एक कांस्य की अंगूठी."

"एक कांस्य की अंगूठी, बूढ़ा मूर्ख! और मुझे वह कहां मिलेगी?"

"राजकुमारी के कमरे में तकिये के नीचे."

गुलाम अपनी मालकिन के पास वापस चला गया.

"बूढ़ा पागल न तो सोना लेगा और न ही चाँदी," उसने कहा.

"फिर वह क्या चाहता है?"

"एक कांस्य की अंगूठी जो तकिये के नीचे रखी हुई है."

राजकुमारी ने कहा, "अंगूठी ढूंढो और उसे दे दो."

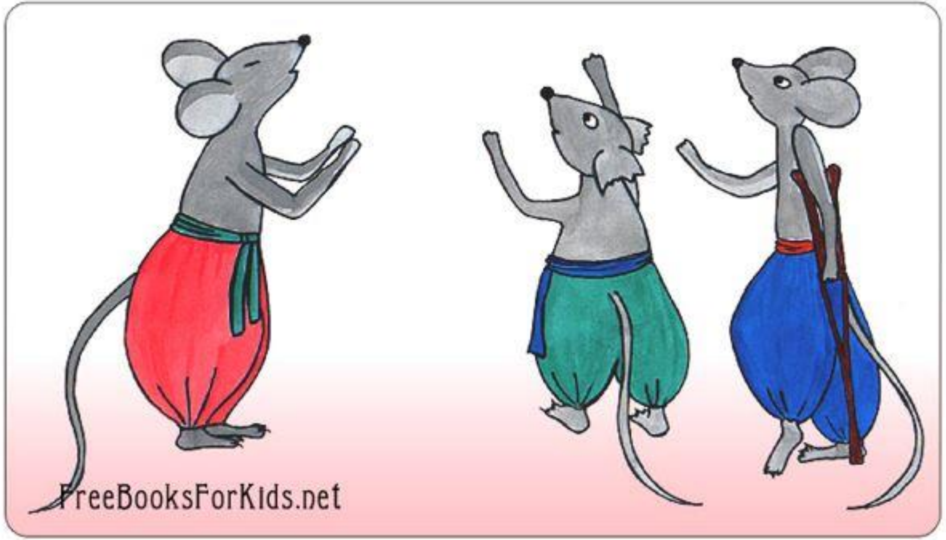
और आख़िरकार दास को कांस्य की अंगूठी मिल गई, जिसे सुनहरे जहाज के कप्तान ने गलती से अपने पीछे छोड़ दिया था और उसे उस आदमी के पास ले गया, जो तुरंत उसे लेकर भाग गया.

मुश्किल से वह अपने घर पहुंचा था, जब अंगूठी लेते हुए उसने कहा, "कांस्य की अंगूठी, अपने स्वामी की आज्ञा मानो. मैं चाहता हूं कि तुम सुनहरे जहाज को काली सड़ी लकड़ी में बदल दो, और चालक दल के लोग भी काले रंग को हों; कि सेंट निकोलस पतवार छोड़ देंगे और जहाज़ पर माल के रूप में सिर्फ काली बिल्लियाँ होंगी.

और कांस्य की अंगूठी के जिन्न ने उसकी बात मानी.

खुद को इस दयनीय स्थिति में समुद्र पर पाकर, युवा कप्तान को एहसास हुआ कि किसी ने उससे कांस्य की अंगूठी चुरा ली होगी, और उसने अपने दुर्भाग्य पर जोर से विलाप किया; लेकिन उससे उसका कोई भला नहीं हुआ.

"हाय!" उसने अपने आप से कहा, "जिसने मेरी अंगूठी ली है उसने संभवतः मेरी प्रिय पत्नी को भी ले लिया होगा. अपने देश वापस जाने से मुझे क्या लाभ होगा?" और वह एक द्वीप से दूसरे द्वीप और एक किनारे से दूसरे किनारे तक चलता रहा. उसे लगता था की वह जहां भी जाता था हर कोई उसका मज़ाक उड़ाता था, और बहुत जल्द उसकी गरीबी इतनी बढ़ गई कि उसके और उसके दल और बेचारी काली बिल्लियों के पास जड़ी-बूटियों के अलावा खाने के लिए कुछ नहीं बचा. काफी देर तक भटकने के बाद वह चूहों से भरे एक द्वीप पर पहुंचा. कप्तान तट पर उतरा और देश का पता लगाने लगा. हर जगह चूहे थे, और चूहों के अलावा वहां कुछ भी नहीं था. कुछ काली बिल्लियाँ उसका पीछा कर रही थीं, और, कई दिनों तक भोजन न मिलने के कारण, वे बहुत भूखी थीं, और चूहों के बीच भयानक उत्पात मचा रही थीं.



तब चूहों की रानी ने एक परिषद बुलाई.

“ये बिल्लियाँ हममें से हरेक चूहे को खा लेंगी,” उसने कहा, “अगर जहाज का कप्तान उन ख़ूंखार जानवरों को बंद नहीं करेगा.” चलो हम अपने बीच के सबसे बहादुर लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल उसके पास भेजें.”

कई चूहों ने खुद को इस मिशन के लिए पेश किया और युवा कप्तान को खोजने के लिए निकल पड़े.

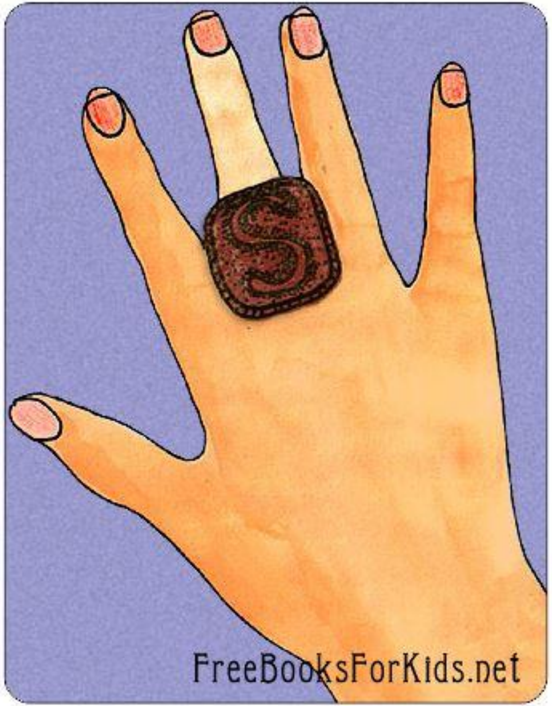
"कप्तान," उन्होंने कहा, "जल्दी से हमारे द्वीप से चले जाओ, नहीं तो हममें से सभी चूहे नष्ट हो जायेंगे."

“ज़रूर,” युवा कप्तान ने उत्तर दिया, “एक शर्त पर. वह यह कि तुम सबसे पहले मुझे एक कांस्य की अंगूठी लौटाओ जिसे एक चतुर जादूगर ने मुझसे चुरा लिया है. यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं अपनी सभी बिल्लियाँ तुम्हारे द्वीप पर लाऊंगा, और फिर तुम सभी नष्ट हो जाओगे.”

चूहे बड़ी निराशा में पीछे हट गए. "क्या किया जाना चाहिए?" रानी ने कहा. "हम यह कांस्य अंगूठी कैसे पा सकते हैं?" उसने एक नई परिषद का आयोजन किया, जिसमें दुनिया के हर हिस्से से चूहों को बुलाया गया, लेकिन किसी को नहीं पता था कि कांस्य की अंगूठी कहां थी. अचानक बहुत दूर देश से तीन चूहे आये. एक अंधा था, दूसरा लंगड़ा, और तीसरे के कान कटे हुए थे.

"हो हो हो!" नवागंतुकों ने कहा. "हम बहुत दूर देश से आये हैं."

"क्या आप जानते हैं कि वह कांस्य की अंगूठी कहाँ है जिसका जिन्न पालन करता है?"



"हो हो हो! हम जानते हैं; एक बूढ़े जादूगर ने उस पर कब्ज़ा कर लिया है, और अब वह उसे दिन को अपनी जेब में और रात को अपने मुँह में रखता है."

"जाओ और उससे यहाँ लाओ, और जितनी जल्दी हो सके वापस आओ."

इसलिए तीनों चूहों ने अपने लिए एक नाव बनाई और जादूगर के देश की ओर चल दिए. जब वे राजधानी पहुँचे तो वे उतरे और महल की ओर भागे, और केवल अंधे चूहे को नाव की देखभाल के लिए किनारे पर छोड़ दिया. फिर उन्होंने रात होने तक प्रतीक्षा की. दुष्ट बूढ़ा आदमी बिस्तर पर लेट गया और उसने पीतल की अंगूठी अपने मुँह में डाल ली, और जल्द ही वह सो गया.

"अब, हम क्या करें?" दो छोटे चूहों ने एक दूसरे से कहा.

कटे कान वाले चूहे को तेल से भरा एक दीपक और काली मिर्च से भरी एक बोतल मिली. इसलिए उसने अपनी पूँछ पहले तेल में और फिर काली मिर्च में डुबोई और जादूगर की नाक के पास रख दी.

"आछूं! आछूं!" बूढ़े को छींक आई, लेकिन वह जागा नहीं लेकिन झटके से पीतल की अंगूठी उसके मुंह से बाहर निकल गई. तुरंत लंगड़े चूहे ने तुरंत कीमती अंगूठी छीन ली और उसे नाव पर ले गया.

जादूगर की निराशा की कल्पना कीजिए जब वह जागा और कांस्य की अंगूठी उसे कहीं नहीं मिली!

लेकिन तब तक हमारे तीन चूहे अपना पुरस्कार लेकर निकल चुके थे. एक अनुकूल हवा उन्हें द्वीप की ओर ले जा रही थी जहाँ चूहों की रानी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी. स्वाभाविक रूप से वे कांस्य की अंगूठी के बारे में बात कर रहे थे.

"हममें से कौन सबसे अधिक श्रेय का पात्र है?" वे एक साथ चिल्लाए.

अंधे चूहे ने कहा, "मैं हूँ, क्योंकि मेरी निगरानी के बिना हमारी नाव खुले समुद्र में चली गई होती."

"नहीं, सचमुच," कान कटे हुए चूहे ने चिल्लाकर कहा; "श्रेय मेरा है. क्या मैंने ही उस आदमी के मुँह से अंगूठी बाहर निकलवाई?"

“नहीं, उसका श्रेय मुझको है,” लंगड़ा चिल्लाया, “क्योंकि मैं अंगूठी लेकर भागा.”

और फिर गाली-गलौज से वे शीघ्र ही मारपीट पर उतर आए, और, अफसोस! जब झगड़ा बहुत बढ़ गया तो कांस्य की अंगूठी समुद्र में गिर गई.

"हम अपनी रानी का सामना कैसे करेंगे," तीन चूहों ने कहा, "जब हमारी मूर्खता से हमने कांस्य की अंगूठी खो दी है और अब हमारे लोगों की पूरी तरह से नष्ट होने की सम्भावना है?" हम अपने देश वापस नहीं जा सकते. चलो, हम इस रेगिस्तानी द्वीप पर ही उतरें और वहीं अपने दुखी जीवन का अंत करें.” आपने कहा हमने किया. नाव द्वीप पर पहुंच गई और चूहे उतर गए.

अंधे चूहे को उसकी दो बहनों ने तेजी से छोड़ दिया और वो मक्खियों का शिकार करने के लिए चली गईं, लेकिन जब वह किनारे पर उदास होकर घूम रही थी तो उसे एक मरी हुई मछली मिली, और वह कुछ खा रही थी, जब उसे बहुत कठोर चीज महसूस हुई. मछली के चिल्लाने पर बाकी दोनों चूहे भी भागे हुए आए.

“यह कांस्य की अंगूठी है! यह तो वो जादुई तावीज़ है!” वे ख़ुशी से रोने लगे, और, फिर से अपनी नाव में बैठकर, वे जल्द ही चूहों के द्वीप पर पहुँच गए. अब समय आ गया था कि वे ऐसा करें, क्योंकि कप्तान बस अपनी बिल्लियों का माल उतारने ही जा रहा था, तभी चूहों का एक प्रतिनिधिमंडल उसके लिए कीमती कांस्य की अंगूठी लेकर पहुंचा.

“कांस्य की अंगूठी,” युवक ने आदेश दिया, “अपने स्वामी की आज्ञा मानो. मेरा जहाज़ पहले जैसा ही दिखाई दे.”

तुरंत अंगूठी का जिन्न काम करने लगा, और पुराना काला जहाज एक बार फिर रेशम की पाल वाला अद्भुत सुनहरा जहाज बन गया; सुंदर नाविक चांदी के मस्तूलों और रेशमी रस्सियों की ओर दौड़े, और जल्द ही वे राजधानी की ओर रवाना हुए.

आह! शीशे जैसे समुद्र के ऊपर से तैरते हुए नाविक कितने आनंद से गा रहे थे!

आख़िरकार जहाज़ बंदरगाह पहुँच गया.

कप्तान उतरा और महल की ओर भागा, जहाँ उसने दुष्ट बूढ़े व्यक्ति को सोते हुए पाया. राजकुमारी ने अपने पति को लम्बे आलिंगन में जकड़ लिया. जादूगर ने भागने की कोशिश की, लेकिन उसे पकड़ लिया गया और मजबूत रस्सियों से बांध दिया गया.

अगले दिन जादूगर को मेवों से लदे एक क्रूर खच्चर की पूँछ से बाँध दिया गया और खच्चर की पीठ पर जितने मेवे थे उतने टुकड़ों में उसके शरीर को बाँट दिया गया.